ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(1): 634-635
www.allresearchjournal.com
Received: 03-11-2017
Accepted: 09-12-2017

डॉ. संध्या गौतम
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, आर्य गर्ल्ज कॉलेज, अम्बाला छावनी, हरियाणा, भारत

Corresponding Author:
डॉ. संध्या गौतम
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, आर्य गर्ल्ज कॉलेज, अम्बाला छावनी, हरियाणा, भारत

महावीर प्रसाद द्विवेदी का व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व

डॉ. संध्या गौतम

प्रस्तावना

युग प्रवर्तक, खड़ी बोली के निर्माता, साहित्य में व्यापक एवं गम्भीर विचारों तथा आदर्शों के संस्थापक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का जन्म सन् 1864 ई. में उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिले के दौलतपुर गाँव में हुआ। आपके पिता का नाम रामसहाय द्विवेदी था। कहा जाता है कि महावीर उनके इष्ट थे, इसीलिए उन्होंने पुत्र का नाम महावीर सहाय रखा। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव की पाठशाला में हुई। प्रधानाध्यापक ने भूल से आपका नाम महावीर प्रसाद लिख दिया था, हिन्दी साहित्य में यह भूल स्थायी बन गई। तेरह वर्ष की अवस्था में आप अंग्रेजी पढ़ने के लिए रायबरेली के जिला स्कूल में भर्ती हुए, यहाँ संस्कृत के अभाव में आपको वैकल्पिक विषय फारसी लेना पड़ा। तत्पश्चात् आप अपने पिता के पास बम्बई चले गए। बम्बई में आपने संस्कृत, गुजराती, मराठी और अंग्रेजी का अच्छा अभ्यास किया। ज्ञान प्राप्ति की जिज्ञासा, कर्मठता तथा सादगी के कारण आप निरन्तर आगे ही बढ़ते चले गए। आपकी उत्कट ज्ञान पिपासा कभी तृप्त न हुई। रेलवे में विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए आपने लेखन कार्य प्रारम्भ कर दिया था। आपकी साहित्य साधना का क्रम सरकारी नौकरी के वातावरण में भी निरन्तर चलता रहा। स्वाभिमान तथा न्यायप्रियता की प्रवृत्ति के कारण आपने रेलवे की नौकरी छोड़ दी। सन् 1903 में जब आपने 'सरस्वती' पत्रिका का कार्यभार संभाला, तो यह दिन हिन्दी साहित्य के लिए ऐतिहासिक महत्त्व का बन गया। सन् 1920 तक यह दायित्व आपने निष्ठापूर्वक निभाया। 'सरस्वती' से अलग होने पर जीवन के अन्तिम अठारह वर्ष आपने गाँव के नीरव वातावरण में व्यतीत किए। 21 दिसम्बर सन् 1938 ई. को रायबरेली में आपका देहावसान हो गया।

स्पष्ट, निडर, मितव्ययी, कुशलवक्ता और न्यायप्रिय स्वभाव के द्विवेदी जी सच्चे अर्थों में महामानव थे। व्यवस्थाप्रिय बनकर और कृत्रिमता से परे रहकर आपने अपना जीवन सत्यनिष्ठ सा बिताया, जिसका प्रतिफल साहित्य में दिखाई देता है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी द्विवेदी जी ने कविता, निबंध, आलोचना आदि के अमिट भंडार से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया। 'भामिनी विलास', 'बेकन विचार रत्नावली', 'मेघदूत', 'वेणी संहार' आदि आपकी अनूदित गद्य कृतियाँ है तो 'विनय–विनोद', विहार–वाटिका', 'स्नेह माला', 'गंगा लहरी', 'ऋतु तरंगिणी', 'कुमार संभव सार' के अनुवाद से प्रभावित होकर आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है कि – ''यह अनुवाद बहुत ही उत्तम हुआ है। इसके मूल के भाव बड़ी सफाई से आए है। संस्कृत के अनुवादों में मूल भाव लाने के प्रयत्न में भाषा में प्रायः जटिलता आ जाया करती है, पर इसमें यह बात जरा भी नहीं है।''

देवी स्तुति शतक, काव्य मंजूषा, अबला–विलाप, कविता–कलाप, सुमन आदि आपकी उल्लेखनीय मौलिक काव्य रचनाएँ है। द्विवेदी जी की खड़ी बोली की प्रथम काव्य रचना 'बलीवर्द' बम्बई के 'वैंकटेश्वर' समाचार पत्र में प्रकाशित हुई। आपकी अधिकांश कविताएँ वर्णनात्मक है। गुलामी किसी भी प्रकार की हो वह आपको स्वीकार नहीं थी अवध समाचार में प्रकाशित ये पंक्तियाँ इस बात का प्रमाण हैं –

चाहे कुटी अति घने वन में बनावे,
चाहे बिना नमक कुत्सित अन्न खावे।
चाहे कभी नर नये पट भी न पावे।
सेवा प्रभो! पर न तू पर की कराये।

राष्ट्रीय भावना, समाज सुधार, आदर्शवादिता, नैतिकता, इतिवृत्तात्मकता आदि को आपके काव्य में प्रधानता मिली है। द्विवेदी जी के काव्य में कवित्व के स्थान पर आचार्यत्व रूप अधिक उद्घाटित हुआ है। वास्तव में आप कवि नहीं कवियों के निर्माता थे। आपके सद्प्रयत्नों से ही मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, अयोध्यासिंह उपाध्याय जेसे कवि रत्न हिन्दी साहित्य को प्राप्त हुए।

आपने ज्ञान के विविध क्षेत्रों इतिहास, अर्थशास्त्र विज्ञान, पुरातत्व, राजनीति, जीवनी आदि से सामग्री लेकर हिन्दी के अभावों की पूर्ति की। हिन्दी गद्य को माँगने–संवारने और परिष्कृत करने में आप आजीवन संलग्न रहे। द्विवेदी जी की मौलिक गद्य कृतियों में 'रसज्ञ रंजन : साहित्य संदर्भ', अदभूत आलाप', 'संचयन' विचार–विमर्श आदि उल्लेखनीय है। निबंधकार द्विवेदी के सामने सदैव पाठकों के ज्ञानवर्धन का दृष्टिकोण ही प्रधान रहा। 'साहित्य की महत्ता' निबंध में आपने मानो गागर में सागर भर दिया है। साहित्य और उसकी शक्ति को परिभाषित करते हुए आपने लिखा – ''ज्ञान राशि के संचित कोश का नाम ही साहित्य है। ––– साहित्य में जो शक्ति छिपी है वह तोप, तलवार और बम के गोलों में भी नहीं पायी जाती।''

'प्रतिभा' शीर्षक निबंध में द्विवेदी जी मनोविकारों को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं – ''प्रतिभावान पुरुषों में कभी–कभी विक्षिप्तता के कोई–कोई लक्षण मिलने पर भी मनुष्य उनकी गणना बावलों में नहीं करते।––जैसे विक्षिप्ततों की समझ असाधारण प्रकार की होती है वैसे ही प्रतिभा वालों की समझ भी असाधारण होती है। वे प्राचीन मार्ग पर न चलकर नये–नये मार्ग निकाला करते हैं, पुरानी लकीर पीटना उन्हें अच्छा नहीं लगता।'' वास्तव में द्विवेदी जी के निबंध ज्ञानवर्द्धन के साथ–साथ कवियों और लेखकों के प्रेरणा स्रोत भी बने। आपके कवियों की उर्मिला विषयक 'उदासीनता' नामक निबंध से प्रेरित होकर मैथिलीशरण गुप्त ने 'साकेत' जैसे महाकाव्य की रचना की। द्विवेदी जी की प्रेरणा से मैथिलीशरण गुप्त महान् कवि बने और उर्मिला सदा के लिए अमर हो गई।

द्विवेदी जी के निबंधों में अतीत का गौरवगान, राष्ट्रीय चेतना, नैतिकता, सामाजिक रूढ़ियों पर प्रहार का स्वर मुखरित हुआ है। आप भारत की अज्ञानता पर व्यंग्य करते हुए लिखते हैं – ''कूप मण्डूक भारत तुम कब तक अंधकार में पड़े रहोगे? प्रकाश में आने के लिए क्या कभी तुम्हारे हृदय में संदिच्छा जागृत नहीं होती। क्या तुम्हें पुराने दिनों की कभी याद नहीं आती।''

हिन्दी भाषा की उत्पत्ति, कालिदास की निरंकुशता, मिश्रबंधु का हिन्दी नवरत्न, तिलक का गीता भाष्य आदि ऐसे अनेक आलोचनात्मक लेख तथा टिप्पणियाँ द्विवेदी जी की जागृत प्रतिभा का परिचय कराते हैं। संपादक के रूप में आपने लोक–रुचि का परिष्कार करते हुए निरन्तर पाठकों का हित चिन्तन किया; नवीन कवियों और लेखकों को प्रोत्साहन दिया। मैथिलीशरण गुप्त ने उन्हें अपना गुरु स्वीकार करते हुए कहा है कि – 'मेरी उल्टी–सीधी प्रारम्भिक रचनाओं का पूर्ण शोधन करके उन्हें 'सरस्वती' में प्रकाशित करना और पत्र द्वारा मेरे उत्साह को बढ़ाना द्विवेदी महाराज का ही काम था।''

भाषा के परिष्कार और परिमार्जन का महत्त्वपूर्ण कार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने किया। आपकी प्रेरणा से ही हिन्दी का व्याकरण बना। 'सरस्वती' के माध्यम से हिन्दी की अस्थिर लेखन शैली को स्थिरता प्रदान करना, भाषा में एकरूपता लाना, भाषा की काट–छाँट, व्याकरण के नियमों की प्रतिष्ठा, वाक्य–विन्यास की व्यवस्था आदि आपके महत्त्वपूर्ण कार्य थे। द्विवेदी जी सरल से सरल भाषा लिखने के पक्ष में थे। आपने न तो संस्कृत शब्दों का विरोध किया और न ही अरबी, फारसी, अंग्रेजी आदि का। आपका मत था कि साहित्य को समृद्ध करने के लिए प्रचलित शब्दों को अपना लेना ही उपयुक्त है। आपका उद्देश्य था हिन्दी भाषा में गंभीर से गंभीर और गूढ़ विषयों को सरल भाषा में व्यक्त करने की क्षमता आ जाए। आप हिन्दी–संसार को यह सूचना देना चाहते थे कि हिन्दी–भाषा की अभिव्यंजना शक्ति किसी स्वतंत्र भाषा से कम नहीं है और उसमें जो कमी है, वह प्रचलित शब्दों को ग्रहण करने से शीघ्र ही दूर की जा सकती है।

जो कुछ कार्य द्विवेदी जी ने किया वह अनुवाद का हो, काव्य–रचना का हो, आलोचना का हो अथवा भाषा संस्कार का हो; या फिर साहित्यिक नेतृत्व का हो वह स्थायी महत्व का हो या अस्थायी – हिन्दी में युग– विशेष के प्रवर्तन और निर्माण में सहायक हुआ है। उसका ऐतिहासिक महत्त्व है। उसी के आधार पर नवीन युग का साहित्य–प्रसाद खड़ा किया जा सका है। आपकी समस्त कृत्तियाँ युग की प्रतिनिधि होने का गौरव रखती है। अतः कहा जा सकता है कि महावीर प्रसाद द्विवेदी के व्यक्तित्त्व की गरिमा उनके कृतित्त्व में स्पष्ट झलकती है। आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी ने आपके गरिमामय व्यक्तित्त्व और कृत्तित्व से प्रभावित होकर लिखा है – ''जिनके मस्तिष्क की भगीरथ शक्ति संसार में नवीन विचारधारा प्रवाहित करती है, 'ते नरबर थोरे जग माही' और द्विवेदी जी उनमें से एक थे।

संदर्भ

1. वर्मा धीरेंद्र, हिंदी साहित्य कोश भाग – 2, ज्ञान मंडल लिमिटेड, वाराणसी।
2. मिश्र नरेश स०, गद्य गंगा, निर्मल प्रकाशन, दिल्ली।
3. शर्मा शिवकुमार, हिंदी साहित्य युग और प्रवृतियां, अशोक प्रकाशन नई, सड़क दिल्ली।
4. गुप्त तनसुख, निबंध प्रभाकर ,सूर्य प्रकाशन नई सड़क दिल्ली।